वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में राष्ट्रवाद की अवधारणा : एक नवीन अर्थ में

डॉ0 निवेदिता मलिक
निर्देशिका राजनीति विज्ञान,
गिन्नी देवी महिला स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, मोदीनगर
Email: nivditamalik002@gmail.com

कुमारी गुलशन
शोधार्थी, राजनीति विज्ञान,
गिन्नी देवी महिला स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, मोदीनगर
Email: arpitpuri586@gmail.com

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र में वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में राष्ट्रवाद की अवधारणा नवीन अर्थ में प्रस्तुत की गई है। राष्ट्रवाद एक ऐसी सामूहिक भावना है जिसकी ताकत का अंदाजा इस हकीकत से लगाया जा सकता है कि इसके आधार पर देश की सीमाओं में रहने वाले लोग अपने मित्र अस्मिताओं के ऊपर राष्ट्र के प्रति निष्ठा को ही अहमियत देते हैं और आवश्यकता पड़ने पर देश के लिए प्राणों का बलिदान भी देने में ही नहीं हिचकीचाते। राष्ट्रवाद की भावना की वजह से ही एक दूसरे से कभी ना मिलने वाले और एक दूसरे से पूरी तरह हम लोग भी राष्ट्रीय एकता के सूत्र में बंध जाते हैं। विश्व के सभी देशों में राष्ट्रवाद के जरिए ही नागरिकों में राष्ट्र से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर सहमति बनाने में कामयाब हो पाए हैं। हमारे देश में नहीं बल्कि पूरे विश्व में राष्ट्र की तुलना मां से की जाती है।

मुख्य शब्द—*स्थायित्ववाद, आधुनिकतावाद, राष्ट्रवाद, सांस्कृतिक और राजनैतिक राष्ट्रवाद, मार्क्सवाद आधुनिकीकरण, औद्योगिकरण, उपनिवेशवाद, पश्चिमी राष्ट्रवाद, पूर्वी राष्ट्रवाद लोकतन्त्रिक गणराज्य, भूमंडलीकरण।*

प्रस्तावना

राष्ट्रवाद एक जटिल, बहु आयामी अवधारणा है, जिसमें अपने राष्ट्र से एक साझी साम्प्रदायिक पहचान समावेशित है। यह एक राजनीतिक विचारधारा के रूप में अभिव्यक्त होता है जो किसी समूह के लिए ऐतिहासिक महत्व वाले किसी क्षेत्र पर साम्प्रदायिक सहायता और कभी—कभी सम्प्रभुता हासिल करने और बनाए रखने की ओर उन्मुख है। इसके अतिरिक्त, सारी विशेषताओं जिनमें आम तौर पर संस्कृति, भाषा, धर्म, राजनीतिक लक्ष्य और आम पितरावली में एक आस्था सम्मिलित है, पर आधारित एक आम साम्प्रदायिक पहचान के विकास और रखरखाव की और, यह और उन्मुख है। एक व्यक्ति की राष्ट्र के भीतर सदस्यता, और संबंधित राष्ट्रवाद का उसका समर्थन उसके सहगामी राष्ट्रीय पहचान द्वारा चित्रित होता है।

किसी राजनीतिक या समाज शास्त्रीय दृष्टिकोण से राष्ट्रवाद के आधारों को समझने के लिए लगभग तीन मुख्य रूपावलियाँ है, पहली, जो वैकल्पिक रूप से आदिमवाद या स्थायीत्त्ववाद जानी जाती हैं, एक दृष्टिकोण है जो राष्ट्रवाद को एक प्राकृतिक दृग्विषय के रूप में वर्णित करता है। इस मत की यह धारणा है कि यद्यपि राष्ट्रीय तत्व अवधारणा का औपचारिक ग्रंथन आधुनिक हो, पर राष्ट्र हमेशा से अस्तित्व में रहे हैं, दूसरी रुपावली संजाति प्रतीकवाद की है जो एक जटिल दृष्टिकोण है, जो राष्ट्रवाद को पूरे इतिहास में एक गत्यात्मक, उत्तक्रांतिकारी दृग्विषय के रूप में पंजीकृत कर के और एक सामूहिक राष्ट्र के ऐतिहासिक अर्थ से ओतप्रोत राष्ट्रीय प्रतीकों से व्यक्ति परख संबंधों के एक परिणाम के रूप में राष्ट्रवाद की ताकत का आगे परीक्षण करके राष्ट्रवाद को समझने का प्रयास करता है। तीसरी और सबसे हावी रुपावली है।

आधुनिकतावाद, जो राष्ट्र को एक हाल के दृग्विषय के रूप में वर्णित करती है, जिसे अस्तित्व के लिए आधुनिक समाज की संरचनात्मक परिस्थितियों की आवश्यकता होती है। क्या गठित करता है एक राष्ट्र को इसके लिए कई परिभाषाएं है, हालांकि, जो राष्ट्रवाद की अनेक विभिन्न किस्मों की ओर ले जाती है। यह वह आस्था हो सकती है कि एक राज्य में नागरिकता किसी एक संजातीय, सांस्कृतिक, धार्मिक या पहचान समूह तक सीमित होनी चाहिए, या वह हो सकती है कि किसी अकेले राज्य में बहुराष्ट्रीयता में आवश्यकता रूप से अल्पसंख्यकों द्वारा भी राष्ट्रीय पहचान को करने और प्रयोग करने का अधिकार सम्मिलित होना चाहिए।

राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्रगान और राष्ट्रीय पहचान के अन्य प्रतीक राष्ट्रीय समुदाय के उच्च रूप से महत्वपूर्ण प्रतीक आमतौर पर माने जाते हैं।

राष्ट्रवाद लोगों के किसी समूह की उस आस्था का नाम है जिसके तहत वे खुद को साझा इतिहास, परंपरा, भाषा, जातीयता और संस्कृति के आधार पर एकजुट मानते हैं। इन्हीं बंधनों के कारण वे इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि उन्हें आत्मा – निर्णय के आधार पर अपने संप्रभु राजनीतिक समुदाय अर्थात 'राष्ट्र' की स्थापना करने का अधिकार है। राष्ट्रवाद के आधार पर बना राष्ट्र उस समय तक कल्पना में ही रहता है जब तक उसे एक राष्ट्र राज्य का रूप नहीं दिया जाता। हालांकी दुनिया में कोई ऐसा राष्ट्र नहीं है जो इन कसौटी पर पूरी तरह से फिट बैठता हो इसके बावजूद अगर विष्व की एटलस उठाकर देखी जाए तो धरती की एक–एक इंच जमीन राश्ट्रों की सीमाओं के बीच बँटी हुई मिलेगी। राश्ट्रवाद का उदय 18 और 19 वी सदी के यूरोप में हुआ था, लेकिन अपने सिर्फ दो ढाई सौ साल पुराने ज्ञात इतिहास के बाद भी यह विचार बेहद शक्तिशाली और टिकाऊ साबित हुआ है। राष्ट्रीय सीमा के भीतर रहने वाले लोगों को अपने – अपने राष्ट्र का अस्तित्व स्वाभाविक, प्राचीन निरंतर और स्थिर लगता है। इस विचार की ताकत का अंदाजा इस हकीकत से भी लगाया जा सकता है कि इसके आधार पर बने राष्ट्रीय समुदाय वर्गीय जातिगत और धार्मिक विभाजन ओं को भी लांग जाते हैं, राष्ट्रवाद के आधार पर बने कार्यक्रम और राजनीतिक परियोजना के हिसाब से जब किसी राष्ट्र राज्य की स्थापना हो जाती है, तो उसकी सीमाओं में रहने वालों से अपेक्षा की जाती है कि वह अपनी विभिन्न अस्मिता के ऊपर राष्ट्र के कानून का पालन करेंगे और उसकी आंतरिक और बाह्य सुरक्षा के लिए अपने प्राणों

का बलिदान भी दे देंगे, यहां यह स्पष्ट कर देना जरूरी है कि आपस में कई समानताएं होने के बावजूद राष्ट्रवाद और देश भक्ति में अंतर है। राष्ट्रवाद अनिवार्य तौर पर किसी न किसी कार्यक्रम और परियोजना का वाहक होता है, जबकि देश भक्ति की भावना ऐसी किसी शर्त की मोहताज नहीं होती है।

राष्ट्रवाद के अलावा राष्ट्रवाद के आलोचकों की कमी नहीं है और ना ही उसे खारिज करने वालों के तर्क कम प्रभावशाली हैं, एक महा ख्याल के तौर पर राष्ट्रवाद छोटी पहचानो को दबाकर पृष्ठभूमि में धकेल देता है, अंग्रेजों के खिलाफ चले राष्ट्रवादी आंदोलन के दौरान रविंद्र नाथ ठाकुर जैसी हस्तियां इस विचार को संदेह की निगाह से देखती थी। पर दिलचस्पी का विषय तो यह है कि राष्ट्रवाद के ज्यादातर आलोचक राष्ट्र की सीमा में रहने के लिए ही विवश नहीं है पर उनमें से कई हस्तियां किसी ना किसी राष्ट्र की स्थापना में योगदान करती हुई नजर आती हैं, राष्ट्रवाद की विभिन्न विचारधाराओं को भी अपने आगोश में समेट लेती हैं, भारत में उदाहरण पर गौर करने से साफ हो जाता है कि किस प्रकार आधुनिकतावाद जवाहरलाल नेहरू मार्क्सवादी कृष्ण मैनन उद्योगवाद विरोधी महात्मा गांधी और इसी तरह कई तरह की विचारधारा के पैरोकारओं ने मिलकर भारतीय राष्ट्रवाद का निर्माण किया है, राष्ट्रवाद के प्रश्न के साथ कहीं सैद्धांतिक उलझनें जुड़ी हुई हैं। मसलन राष्ट्रवाद और आधुनिक संस्कृति व पूंजीवाद का आपसी संबंध क्या है? पष्चिमी और पूर्वी राष्ट्रवाद के बीच क्या फर्क है? एक राजनैतिक परिघटना के तौर पर राष्ट्रवाद प्रगतिशील है या प्रतिगामी ?

हालांकि धर्म को राष्ट्र के बुनियादी आधार के तौर पर मान्यता प्राप्त नहीं है, फिर भी भाषा के साथ साथ साथ धर्म के आधार पर भी राष्ट्र की रचना होती है ? सवाल यह है कि यह कारक राष्ट्रों को एकजुट रखने के एकजुट रखने में नाकाम क्यों हो जाते हैं? सांस्कृतिक और राजनीतिक राष्ट्रवाद को अलग अलग कैसे समझा जा सकता है? इन सवालों का जवाब देना आसान नहीं है, क्योंकि राजनीतिक विज्ञान में एक सिद्धांत के तौर पर राष्ट्रवाद का सुव्यवस्थित और गहन अध्ययन मौजूद नहीं है। विभिन्न राष्ट्रवादियों का परिस्थिति जन्य चरित्र इन जटिलताओं को बढ़ाता है, यह कहा जाता है कि ऊपर वर्णित समाज के अलावा राष्ट्रवाद की कोई एक ऐसी सार्वभौम सिद्धांत उपलब्ध नहीं है जिसे सभी पक्षों द्वारा मान्यता दी जाती हो।

मार्क्सवाद भी राष्ट्रवाद से संबंधित सिद्धांत मुहैया कराने में नाकाम रहा है। दुनिया भर के मजदूरों को एक होने का नारा देने वाले मार्क्स और एंगल्स मानते हैं, कि मजदूरों का कोई देश नहीं होता। अपने लेखन में उन्होंने–वर्ग विभाजन के परे जाकर राजनीतिक सामाजिक और सांस्कृतिक एकता करने वाली किसी परिघटना को तरजीह नहीं दी। अपने युग के कुछ अंतरराष्ट्रीय संघर्षो के बारे में तो उनकी तिरस्कार पूर्ण धारणा यह थी कि वह नष्ट हो जाने के लिए अभिशप्त हैं। राष्ट्रवाद का कोई मुकम्मल सिद्धांत देने के बजाय उनकी रचनाएं अपने युग की व्यवहारिक राजनीति के तहत राष्ट्रीय प्रश्न पर विचार करती है। दूसरे और तीसरे इंटरनेशनल में राष्ट्रवाद पर काफी बहस हुई। लेनिन ने एक विशाल बहुजातीय साम्राज्य में क्रांति करने की समस्याओं से जूझते हुए राजनीतिक लोकतंत्र की आवश्यकता को अपने राष्ट्रवाद संबंधी

विश्लेषण के केंद्र में रखा उनकी निष्कर्ष था, कि राष्ट्रों को आत्मा ने आत्मा निर्णय का अधिकार मिलना चाहिए। इसके बाद स्टालिन की विख्यात रचना मार्क्सिज्म मैक्सिमम मार्क्सिज्म मार्क्सिज्म एंड नेशनल कलेक्शन सामने आई जिसमें उन्होंने राष्ट्रवाद का सिद्धांत देने की कोशिश की। स्तालिन ने राष्ट्र के पांच मुख्य तत्व बताएं एक स्थिर युक्त समुदाय, एक अलग –क्षेत्र समान भाषा, आर्थिक सुसंगति और सामूहिक चरित्र।

क्योंकि स्तालिन राष्ट्रों के उभार को औद्योगिकरण की जरूरतों से जोड़ कर देख रहे थे। इसलिए उनका सिद्धांत राष्ट्रवाद की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और उससे उभरने वाले बहुत से प्रश्नों की उपेक्षा कर देता था। कुल मिलाकर मार्क्सवादी मानते थे कि राष्ट्रवाद पूंजीवाद के विकास में उसका सहयोगी बनकर उभरा है। इस लिहाज से उसे एक बुजर्वा विचारधारा की श्रेणी में रखा जाना चाहिए। राष्ट्रवाद प्रभुत्वशाली वर्गी को एकजुट करके राजनीतिक समुदाय की एक भ्रान्त अनुभूति पैदा करता है। ताकि पूंजी पतियों द्वारा किए जाने वाले अहर्निश शोषण और गरीबी करण के बावजूद आम लोग धनी वर्ग के साथ एकता का एहसास करते रहे मार्क्सवाद विमर्श का एक विरोधाभास यह है, कि राष्ट्रवाद को पूंजीवादी वर्ग की विचारधारा मानने के बाद भी क्रांतिकारी राजनीति के धरातल पर कई कम्युनिस्ट पार्टियों ने राष्ट्रवाद को अपनी गोलबंदी का आधार बनाया है। क्रांति के पश्चात समाजवादी समाज की रचना के लिए भी राष्ट्रवाद भावनाओं का इस्तेमाल किया गया है। 70 के दशक में होरेस बी0 डेविस ने मार्क्सवादी तर्को का सार–संकलन करते हुए राष्ट्रवाद के एक रूप को ज्ञानोदय से जोड़कर बुद्धि संगत करार दिया और दूसरे रूप को संस्कृति और परंपरा परंपरा से जोड़कर भावनात्मक बताया। लेकिन डेविस ने भी राष्ट्रवाद को एक औजार से ज्यादा अहमियत नहीं दी और कहा कि हथौड़े से हत्या भी की जा सकती है और निर्माण भी। राष्ट्रवाद के जरिए जब उत्पीड़ित समुदाय अपनी आजादी के लिए संघर्ष करते हैं। तो एक तो वह एक सकारात्मक नैतिक शक्ति बन जाता है और जब राष्ट्र के नाम पर आक्रमण की कार्रवाई की जाती है। तो उसका नैतिक बचाव नहीं किया जा सकता। राष्ट्रवाद की सभी मार्क्सवाद व्याख्याओं में सर्वाधिक चमकदार थिअरी बेनेडिक्ट एंडरसन द्वारा प्रतिपादित कल्पित समुदाय की मानी जाती है। एडिशन के मुख्य सरोकार यह है कि एक –दूसरे से कभी ना मिलने वाले और एक– दूसरे से पूरी तरह अपरिचित लोग राष्ट्रीय एकता में किस तरह बने रहते हैं।

दरअसल, राष्ट्रवाद से संबंधित सभी व्याख्याए थोड़ी दूर चलने के बाद पेचीदा हो जाती हैं। इनमें एक प्रमुख व्याख्या यह है कि आधुनिकी करण की प्रक्रिया राष्ट्रवाद के जरिए खुद को जमीन पर उतारती है। इस तरह 'राष्ट्रवाद' आधुनिकीकरण के धर्म के तौर पर उभरता है। आधुनिकीकरण के कारण सामाजिक जीवन में आई जबरदस्त आर्थिक और राजनीतिक उथल–पुथल के बीच राष्ट्रवाद के जरिए ही व्यक्ति एक अस्मिता और संस्कृति शक्ति के सूत्र हासिल कर पाया। दूसरी तरफ यह भी एक हकीकत है कि राष्ट्रवाद कई बार आधुनिकीकरण को रोकने या सीमित करने वाली ताकत भी साबित हुआ है। राष्ट्रवाद दलालों के आधार पर ही ऐसे कई व्यापार समझौते का विरोध किया जाता है।

जिनसे राष्ट्रीय उद्योग करण और आर्थिक समृद्धि की प्रक्रिया को गति मिल सकती है। राष्ट्रवाद के धार्मिक संस्करण (जैसे, इरान का इस्लामिक राष्ट्रवाद या भारतीय राजनीति के धार्मिक पहलू) सेकुलवी करण की प्रक्रिया को अगर पूरी तरह ठप नहीं कर पाते तो धीमा अवश्य कर देते हैं। दूसरी तीसरी दुनिया के अधिकतर देशों में राष्ट्रवाद करीब आधी सदी बीत जाने के बाद भी उद्योगी करण और खेतिहर अर्थव्यवस्था की जद्दोजहद में फंसा हुआ है।

पश्चिमी और पूर्वी राष्ट्रवाद ओं की तुलना करने के दौरान कुछ विद्वानों ने पूर्वी राष्ट्रवाद को पश्चिमी राष्ट्रवाद के स्वस्थ मूल्यों की कमी का शिकार बताया है। कुछ विधान पश्चिमी राष्ट्रवाद को राजनीतिक और पूर्वी राष्ट्रवाद कैसे संस्कृति की श्रेणी में रखते हैं। इन धारणाओं के विपरीत कुछ अन्य विधान उल्टी मान्यता पेश करते हैं।

यूरोपियन राष्ट्रवाद एक देशज ऐतिहासिक प्रक्रिया से निकलने के कारण कहीं अधिक सांस्कृतिक है, जबकि पूर्वी राष्ट्रवाद उपनिवेशवाद विरोधी राजनीतिक आंदोलन के हाथों गढ़े जाने के कारण है मूलतः राजनीतिक है। दूसरे अगर तीसरी दुनिया के देशों के राष्ट्रवाद पर प्रजातिय, जातीय और संस्कृतिक पहलू हावी हैं तो उनके पीछे उपनिवेशवाद की भूमिका है जिसकी जिम्मेदारी पश्चिम पर ही डाली जानी चाहिए।

उपनिवेशवादी यों ने मनमाने ढंग से स्थानीय जातीयताओं की उपेक्षा की जिसके कारण अफ्रीका में कई कबीलाई और जाति समुदायों परस्पर संघर्षरत राश्ट्रों में विभाजित हो गए हैं। तीसरी, भारत समेत ऐसे कई समाज है जो पारस्परिक रूप से सांस्कृतिक, धार्मिक और भाषाई विविधता से संपन्न है ऐसे समाजों में राष्ट्रवाद का अनुभव पश्चिमी अनुभव से भिन्न होना लाजमी है। ऐसी परिस्थितियों के कभी तो राष्ट्रवाद बहुलता के बीच परस्पर संस्कृति से सूत्र का काम करता है। और कभी उप राष्ट्रीयताओं के बीच हिंसक संघर्ष और प्रतियोगिता में फंस जाता है।

पश्चिमी राष्ट्रवाद के प्रशंसक पूर्वी राष्ट्रवाद के कई कुछ पहलुओं को तर्क बुद्धि से परे बताकर उसके महत्व को खारिज करते हैं। लेकिन कुछ विद्वानों ने ध्यान दिलाया है कि इस तरह के तत्व पश्चिमी राष्ट्रवाद में भी निर्णायक रूप से मौजूद है । मसलन अगर भारतीय राष्ट्रवादी किसी जमाने में काली देवी की आराधना करके प्रेरणा प्राप्त करते थे तो यूरोप के रोमानी राष्ट्रवादी भी इसी प्रकार के सामूहिकतावादी, हिंसक और अध्यात्मिक आयामों से प्रेरित होते रहे हैं। पश्चिमी के राष्ट्रवाद के उदार, समझदार और प्रदेशिक साबित करना एक व्याख्यात्मक आदर्श की उपलब्धि तो करा सकता है, पर व्यवहारिक रूप से ऐसा नहीं है। पश्चिमी राष्ट्रवाद हो या पूर्वी राष्ट्रवाद, दोनों ही परिस्थितियों में सांस्कृतिक और राजनीतिक राष्ट्रवाद एक– दूसरे से प्रतियोगिता करते हैं करते हुए एक दूसरे को पुष्ट करते चलते हैं।

भूमंडलीकरण की प्रक्रिया ने राष्ट्रवाद को जबरदस्त चुनौती दी है। बीसवीं सदी के आखिरी 2 दर्शकों और 21वीं सदी दर्शकों को और 21वीं सदी के पहले दशक के बाद कहा जा सकता हैस कि कम से कम दुनिया का प्रभु वर्ग 1 सी भाषा बोलता है, एक ही यात्राएं करता है, एक सा खाना है। उसके लिए राष्ट्रीय सीमाओं के कई खास मायने नहीं रह गए हैं। इसके– अलावा आर्थिक भूमंडलीकरण बड़े पैमाने पर होने वाली लोगों की आवाज ही, इंटरनेट और

मोबाइल फोन जैसी प्रौद्योगिकोय दुनिया में फसलों को बहुत कम कर दिया है। ऐसे लोगों की संख्या बढ़ी जा रही है जो अपने देश का सांस्कृतिक माहौल से दूर काम और जीवन की सार्थकता की तलाश में जाना चाहते हैं। यूरोप की धरती ने राष्ट्रवाद को जन्म दिया था और वही अब यूरोपीय संघ का उदय राष्ट्रवाद का महत्व कम कर रहा है। इसी नई परिस्थिति में कुछ विद्वान कहने लगे हैं कि जिन ताकतों ने कभी राष्ट्रवाद को मजबूत किया था, वह उस वही उसके पतन का कारण बनने वाली हैस राष्ट्रीय संरचनाओं के बजाय राष्ट्रों से भरे जाने वाले आर्थिक और राजनीतिक गठजोड़ आने वाली सदियों पर हावी रहेंगे।

इन दावों में सच्चाई तो है लेकिन केवल आंशिक किस्म की इस राजनीतिक ताकत के रूप में राष्ट्रवाद आज भी निर्णायक बना हुआ है पूर्व में चल रहे सांस्कृतिक पुनरुत्थान वादी आंदोलन दुनिया भर में ही रही नस्ल और आव्रजन संबंधी बहस और पश्चिम का बी पी ओ बिजनेस प्रोसेस आउटसोर्सिंग संबंधी विवाद इसका प्रमाण है।

आज भी फिलिस्तीनियों द्वारा राष्ट्रीय आत्मा –निर्णय का आंदोलन जारी है ईस्ट तिमोर इंडोनेशिया से हाल ही में आजाद होकर अलग राष्ट्र बना है भूमंडलीकरण की प्रक्रिया ने राष्ट्रवाद के बोल बाले को कुछ सदी संदिग्ध अब अवश्य कर दिया है। पर इस तथ्य से इनकार नहीं किया जा सकता कि उदारता वादी और लोकतांत्रिक राज्य से गठजोड़ कर के गरीबी और पिछड़ेपन के शिकार समाजों को आगे ले जाने में राष्ट्रवाद की ऐतिहासिक भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। सभी उत्तर औपनिवेशिक समाजों ने वैकासिक राष्ट्रवाद का सहारा लिया है खासतौर से भारत जैसे बहुलता मूलक समाज को एक राजनीतिक समुदाय में विकसित करने में राष्ट्रवाद एक प्रमुख कारक रहा है।

किसी भी राष्ट्र की प्रगति के लिए उसके नागरिकों में राष्ट्रवाद की भावना का होना भी जरूरी है राष्ट्रवाद की महत्ता को समझते हुए और अपने नागरिकों में देश प्रेम की भावना की पुनरावृत्ति करने के उद्देश्य से पूरे विश्व में सभी सरकार अनिवार्य रूप से राष्ट्रीय पर्वों का आयोजन करती हैं। इन कार्यक्रमों के दौरान राष्ट्रीय ध्वज के प्रति सम्मान व्यक्त किया जाता है। कुल मिला कर किसी भी राष्ट्र की प्रगति के लिए नागरिकों की एकता एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और राष्ट्रवाद कि वह भावना है और राष्ट्रवाद ही वह भावना है जो लोगों को धर्म जाति ऊंच–नीच में बंधनों को धर्म जाति ऊंच–नीच में बंधनों को समाप्त करते हुए एकता के सूत्र में है पिरोती है।

राष्ट्रवाद एक ऐसी सामूहिक भावना है जिसकी ताकत का अंदाजा इस हकीकत से लगाया जा सकता है कि इसके आधार पर बने देश की सीमाओं में रहने वाले लोग अपनी विभिन्न अस्मिता के ऊपर राष्ट्र के प्रति निष्ठा को ही अहमियत देते हैं और आवश्यकता पड़ने पर देश के लिए प्राणों का बलिदान भी देने में नहीं हिचकिचाते। राष्ट्रवाद की भावना की वजह से ही एक दूसरे से कभी ना मिलने वाले और एक दूसरे से पूरी तरह अपरिचित लोग भी राष्ट्रीय एकता के सूत्र में बंध जाते हैं। विश्व के सभी देशों में राष्ट्रवाद के जरिए ही नागरिकों में राष्ट्र से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर सहमति बनाने में कामयाब हो पाए हैं।

हमारे देश में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में राष्ट्र की तुलना मां से की जाती है जिस प्रकार मां अपने बच्चे को भरण पोषण करती है उसी प्रकार एक राष्ट्र भी अपने नागरिकों के जीवन में की विभिन्न आवश्यकताओं को अपने प्राकृतिक संसाधनों द्वारा पूरा करता है हम राष्ट्रवाद की भावना द्वारा ही वर्गीय जातिगत एवं धार्मिक विभाजन कई मतभेदों को भुलाने में कामयाब होते हैं और ऐसा देखा गया है कि जब भी कहीं किन्हीं दो देशों में युद्ध की स्थिति पैदा होती है तो उन देशों के सभी नागरिक एकजुट होकर देश हित में राष्ट्रवाद की भावना के साथ अपने अपने देश के सैनिकों का हौसला अफजाई करते हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1. वाजपेई बी.एन *आधुनिक राजनीतिक विचारधाराएं,* प्रकाश बुक डिपो बड़ा बाजार, बरेली।
2. सिंहल, सुरेश चंद्र *भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन एवं भारतीय गणतंत्र का संविधान,* लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा –3 ।
3. तिवारी, गंगाधर, *आधुनिक राजनीतिक विचारधाराएं,* मीनाक्षी प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. नारायण इकबाल, *राजनीति शास्त्र के मूल सिद्धांत,* रतन प्रकाशन मंदिर, आगरा।
5. श्रीवास्तव प्रभात चंद्र, *राजनीति शास्त्र के सिद्धांत,* नेशनल पब्लिशिंग हाउस,1978, दिल्ली।
6. रस्तोगी, गौरीनाथ, *भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन तथा शासन एवं राजनीति,* नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
7. चतुर्वेदी, दिनेश चंद, *भारत का राष्ट्रीय आंदोलन,* मीनाक्षी प्रकाशन, नई दिल्ली।
8. ताराचंद, *भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास,* प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार।
9. अवस्थी, *आनंद प्रकाश,* भारतीय राजनीतिक विचारक, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा।
10. वर्मा, बी,पी *आधुनिक भारतीय राजनीतिक संविधान का विकास तथा राष्ट्रीय आंदोलन,* एंड कंपनी लिमिटेड।
11. जोहरी, जगदीश चंद्र, *आधुनिक राजनीति विज्ञान के सिद्धांत,* स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड।
12. इंजीनियर जॉब्स बॉस(1089) *नेशन एंड नेशनलिज्म 1789* ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस कार्ड 2018 मार्च मार्केट थिअरी एंड नेशनल पॉलिटिक्स, से नई दिल्ली।
13. स्मिथ *नेशनल (1994)* ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी, प्रेस ऑक्सफोर्ड।
14. सुनलिनी कुमार राजीव (2008), *अशोकस आचार्य पॉलीटिकल,* थिअरीरू, नई दिल्ली।